



বিজয়নারায়ণ মহাবিদ্যালয় পত্রিকা

১৯৬৬

চতুর্দশ বার্ষিক সংখ্যা



শ্রদ্ধাবান্ লভতে জ্ঞানম্

॥ সম্পাদক ॥

ঃ বঙ্কিম ভট্টাচার্য ঃ

॥ সহঃ সম্পাদক ॥

ঃ খলিলুর রহমান ঃ



# —সূচী গত্র—

| বিষয়   | লেখক                                  | পত্রাঙ্ক |
|---|---------------------------------------|----------|
| কল্যাণবাণী  | —                                     | ১        |
| সম্পাদকের পাতা  | —                                     | ৩        |
| প্রার্থনা (কবিতা)                                     | — প্রণবেশ্বর ভট্টাচার্য               | ৪        |
| জাতির অভ্যুত্থানে বিবেকানন্দ (প্রবন্ধ)                | — দীপক গঙ্গোপাধ্যায়                  | ৫        |
| প্রভাতী শিশির আর আমার যৌবন (কবিতা)                    | — দীপকরঞ্জন ঘোষ                       | ১০       |
| মানুষের কবি রবীন্দ্রনাথ (প্রবন্ধ)                     | — চিত্তরঞ্জন দাশ                      | ১২       |
| একটি সকাল (কবিতা)                                     | — আসরফ্ আলী সরকার                     | ১৩       |
| কবি রজনীকান্ত ও আমরা (আলোচনা)                         | — প্রশান্তকুমার দে                    | ২০       |
| মার্জনা (কবিতা)                                       | — শঙ্কুচরণ কুণ্ডু                     | ২২       |
| 'ভাবা'র প্রতি (আলোচনা)                                | — অনিলকুমার মাকর                      | ২৪       |
| স্মৃতিকথা (কবিতা)                                     | — উৎপল ঘোষ                            | ২৭       |
| তোমার জন্মদিনে (প্রবন্ধ)                              | — অমিয়কুমার ভট্টাচার্য               | ২৯       |
| আর্ষশাস্ত্র, পাশ্চাত্য-বিজ্ঞান ও হিন্দুধর্ম (প্রবন্ধ) | — অধ্যাপক মনুখ দাম                    | ৩১       |
| জীবন পথে (কবিতা)                                      | — সুধীরকুমার পান                      | ৩৭       |
| গণিতে আশুতোষ (প্রবন্ধ)                                | — অধ্যাপক শক্তিপ্রসাদ বন্দ্যোপাধ্যায় | ৩৮       |
| দোসর (গল্প)   | — দীপকর ভট্টাচার্য                    | ৪৮       |
| স্মৃতির অস্তরালে (গল্প)                               | — মাণিকচন্দ্র রুদ্র                   | ৫৩       |
| ওরা আসে ওরা যায় (কবিতা)                              | — কানাই রায়                          | ৫৮       |
| আপা (রম্যরচনা)  | — দেবদাস চৌধুরী                       | ৬০       |
| গণিতে রাশির ক্রমবিবর্তন (প্রবন্ধ)                     | — অধ্যাপক সঞ্জিতকুমার সরকার           | ৬২       |
| সুকাল-বিকাল-সন্ধ্যা (কবিতা)                           | — সুখেন্দু ভট্টাচার্য                 | ৬৮       |
| ছেঁড়া চিঠি (রম্যরচনা)                                | — সুধীর পান                           | ৭২       |
| রাশি বিজ্ঞান (প্রবন্ধ)                                | — অশোক নন্দী ও বিশ্বনাথ দাস           | ৭৮       |
| মুক্তি (কবিতা)  | — এম, এ, রহিম                         | ৮২       |



|  |                              |     |
|--|------------------------------|-----|
| সাহিত্য (কবিতা)                                      | —সাধনচন্দ্র আদক              |     |
| চন্দনবাড়ি (গল্প)                                    | —হীরালাল মুখোপাধ্যায়        | ৮৩  |
| হাওড়াসেতু: (কবিতা)                                  | —অধ্যাপক কুমারনাথ ভট্টাচার্য | ৮৪  |
| Necessity of Religion                                | —Principal G. C. Majumder    | ৯০  |
| Lal Bahadur Shastri—a spark of India                 | —Asoke Kumar Pyne            | ৯২  |
| Ah those Superstitions                               | —Prof. B. Mukhopadhyay       | ৯৬  |
| Education in the eye of a Student                    | —Santasil Ghosh              | ১০০ |
| William Wordsworth, the<br>poet of nature            | —Gour Chandra Banerjee       | ১০৫ |
| Defence and Economic well-being                      | —Naba Kumar Biswas           | ১১০ |
| Hellenism of Keats                                   | —Prof. P. Pal                | ১১৪ |
| Natural Forces                                       | —Prof. Alok Kumar De         | ১১৮ |
| The grand old man of literature<br>—Somerset Maugham | —Chinmoy Chakravorty         | ১২০ |
| <b>মহিলা বিভাগ—</b>                                  |                              |     |
| ওরা আসে দলে দলে (কবিতা)                              | —শুভ্রা রায়                 | ১২১ |
| আমাদের শাস্ত্রীজী (প্রবন্ধ)                          | —শীলা রায়চৌধুরী             | ১২৮ |
| অনার্স পড়তে হবে (কবিতা)                             | —রমা মুখোপাধ্যায়            | ১৩০ |
| স্বতি তো কত ভাবে মাপলাম (রম্যরচনা)                   | —শিপ্রা ঘোষ                  | ১৩২ |
| সে যে ডাকে (কবিতা)                                   | —মঞ্জু শ্রী চট্টোপাধ্যায়    | ১৩৩ |
| ছল (গল্প)  | —সাবিত্রী দাস                | ১৩৬ |
| এ্যাক্সিডেন্ট (গল্প)                                 | —নীলিমা বসুমল্লিক            | ১৩৭ |
| আমার মহীশূর ভ্রমণের দু'একটি কথা (ভ্রমণ কথা)          | —অনীতা বোস                   | ১৪২ |
| Editorial Notes—                                     |                              | ১৪৫ |
| Report from the G. S.                                |                              | ১৫১ |
| আমাদের কথা   |                              | ১৫৩ |
| পরিশেষে  |                              | ১৫৬ |